## पद १८५

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

करुणाकर यादवराया ये। ये धांवुनि या समया। नको करूं विलंब क्षण एक कांही। ही घडी जातसे वाया।।ध्रु.।। रुक्मी दादा

हुडिकतसे वर खासा मज जोगा। छप्पन्न देशींचे राजे आले कौंडण्यपुरालागीं। त्यांतुनि एक निवडिला निश्चय शिशुपाला द्याया।।१।। माधवा मधुसूदना रे मुलीधर गोपाळा। गोवर्धनधारी येई रे निज भक्त प्रतिपाळा। मी दासी तुझी दयाळा। करीं कृपेची छाया।।२।। वाचुनि पाहतां पत्र हरी तांतडीनें निघाले। संगें घेउनि यदुकुळ सकल कौंडण्यपुरा आले। माणिक प्रभुजीनें विरली रुक्मिणी आदिमाया।।३।।